दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-V (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 05 31/07/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) यूनीकोड और हिंदी

हिन्दी भाषा का प्रयोग वैश्विक स्तर पर व्यापक न हो पाने का एक बहुत बड़ा कारण तकनीकी विकास की दृष्टि से पिछड़ापन रहा है।

आस्की आधारित कोडिंग प्रणाली में 8 बिट की एक बाइट बनती थी जिससे 256 संकेत ही संभव हो पाते थे और देवनागरी लिपि का सुलभ टंकण संभव नहीं हो पाता था।

इस समस्या का समाधान यूनीकोड अर्थात् यूनीवर्सल कोडिंग के आने से हुआ जिसमें 16 बिट की एक बाइट बनने से लगभग 65000 संकेतों का निर्माण संभव हुआ। और लगभग हर भाषा के हर वर्ण के लिए भिन्न कोड की व्यवस्था हो पाई।

पुनः यूनीकोड के आने से हिन्दी में आने वाली फॉन्ट की समस्या का समाधान भी हुआ और एक कम्प्यूटर पर टाइप की गई विषयवस्तु को दूसरे कम्प्यूटर पर ज्यों का त्यों खोल पाना सम्भव हुआ।

इस प्रकार यूनीकोड ने हिन्दी भाषा के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैश्वीकरण, सरलीकरण व तकनीकी ~~विक~~ क्षेत्रों में प्रयोग को सुलभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यूनीकोड के इसी योगदान को देखते हुए कवि अशोक चक्रधर ने लिखा है

"सबसे प्यारी अपनी भाषा
मॉं हिन्दी की मिली गोद है
यूनीकोड को महामोद है"

यूनीकोड हिन्दी ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ
do not write
except the
number in
ce)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान

देवनागरी लिपि के सुधार एवं मानकीकरण में जिन संस्थाओं की तरफ से प्रारंभिक कदम उठाए गए उनमें काशी नागरी प्रचारिणी सभा का अहम योगदान है।

सभा ने 'नागरी लिपि सुधार समिति' का गठन किया तथा निम्नलिखित सुझाव दिए

1. 'अ' पर आधारित स्वरमाला को मान्यता मिलनी चाहिए अर्थात 'इ' का अि तथा 'ई' को 'अी' जैसे प्रयोग प्रचलन में लाने चाहिए

2. हिन्दी का प्रत्येक वर्ण खड़ी पाई युक्त होना चाहिए। जैसे कि 'क' तथा 'ग' खड़ी पाई युक्त हैं जबकि 'द' नहीं।

3. संयुक्ताक्षरों तथा अर्द्धाक्षरों के लिए खड़ी पाई हटा देनी चाहिए इस प्रकार खड़ी पाई के पहले का भाग व्यंजन का प्रतीक होगा जबकि खड़ी पाई व बाद का भाग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अक्षर में निहित स्वर का।

4. शिरोरेखा का प्रयोग बना रहना चाहिए,
= यह प्रत्येक शब्द को स्वतन्त्र सत्ता प्रदान करती है।

नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का गठन हुआ जिसने देवनागरी लिपि के सुधार हेतु अथक प्रयास जारी रखे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) हिंदी की लिंग-व्यवस्था की समस्याएँ

हिन्दी की लिंग व्यवस्था संस्कृत की परम्परा से ही उत्पन्न किन्तु पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश से होते हुए सरलीकरण से बनी है जो किसी तार्किक नियम पर आधारित न होकर लोक-प्रचलनों का परिणाम है।

दो लिंगों की व्यवस्था के कारण ऐसे शब्दों के लिंग निर्धारण में समस्या आना अवश्यंभावी है जो या तो निर्जीव हैं या फिर जिन्हें प्राकृतिक रूप से कोई लिंग नहीं मिला। समस्याओं को निम्नांकित बिन्दुओं में घेरा जा सकता है

1. पदार्थों व प्राकृतिक वस्तुओं में कुछ कुछ को पुल्लिंग जबकि कुछ को स्त्रीलिंग माना गया है जैसे नदी स्त्रीलिंग है जबकि तालाब पुल्लिंग, लौकी स्त्रीलिंग है जबकि करेला पुल्लिंग।

2. दूसरी समस्या पदनामों को लेकर है जैसे कि राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री इत्यादि। इन नामों के स्त्रीलिंग लोकप्रचलन की दृष्टि से सभ्य नहीं माने जा सकते तथा प्रचलन में नहीं हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. अन्य भाषाओं से ग्रहण किए गए शब्दों का लिंग परिवर्तन भी हिन्दी में दिखता है जैसे आत्मा को संस्कृत में पुल्लिंग जबकि हिन्दी में स्त्रीलिंग माना गया है।

इन सब ~~कारण~~ कारणों से नए व्यक्ति के लिए हिन्दी की लिंग व्यवस्था दुरूह साबित होती है। परन्तु समय के साथ प्रयोग मानकीकृत व स्थिर हो रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था

विशेषण ऐसे ~~शब्द~~ पदों को कहते हैं जो संज्ञा ~~की~~ या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं।

हिन्दी में विशेषणों के मुख्यतः चार प्रकार माने गए हैं।

(1) गुणवाचक विशेषण : किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान आदि के रंग, आकार या किसी अन्य विशेषता को बताने वाले विशेषण गुणवाचक कहलाते हैं।
उदाहरणार्थ : काला लड़का, गोरी लड़की

(2) सार्वनामिक विशेषण : जब कोई सार्वनामिक पद किसी संज्ञा की विशेषता बताता है जो सार्वनामिक विशेषण कहलाता है।
उदाहरणार्थ : उसकी किताब, इत्यादि

(3) परिमाणवाचक विशेषण : किसी द्रव्यवाचक संज्ञा की मात्रा का बोध कराने वाले विशेषण परिमाणवाचक कहलाते हैं।
यथा- एक किलो शक्कर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ढेर भर गुड़

(iv) संख्यावाचक विशेषण : जो विशेषण किसी जातिवाचक संज्ञा की मात्रा का ज्ञान कराते हों वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

यथा : चार बच्चे
बहुत से केले

पुनः

(1) गुणवाचक एवं सार्वनामिक विशेषण विकारी हैं जबकि परिमाणवाचक व संख्यावाचक अविकारी

(ii) ~~तुल्य~~

हिन्दी की विशेषण-व्यवस्था लोकप्रचलन व तार्किक नियमों के संलयन से व्यवस्थित व वस्तुनिष्ठ हो गई है जो मानकीकरण की दिशा में सफल पड़ाव है।

— x —

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण के ~~प्र~~ प्रयत्न 20वीं शताब्दी के आखिरी दशक से शुरू हुए। सर्वप्रथम हैदराबाद स्थित ई.सी. आई. एल नामक कम्पनी ने 256 संकेतों का एक ~~फॉन्ट~~ टाइप विकसित किया। ~~और~~ इस ~~दि~~ दिशा में अगला प्रयास डी. सी. एम. नामक कम्पनी ने 'सिद्धार्थ' नामक मशीन निकाल कर किया जिसमें 'इनस्क्रिप्ट' आधारित टाइपिंग की व्यवस्था की गई।

इस दिशा में तीसरा और सबसे बड़ा प्रयास सी - डैक (C-DAC) नामक कम्पनी की तरफ से किया गया जिसने GIST (जी-आई.एस. टी.) ~~यथा~~ नामक एक कार्ड निकाला जो किसी भी लिपि के टंकण में सहायता करता था और जिसने ~~०~~ देवनागरी के टंकण को सहज बना दिया।

माइक्रोसॉफ्ट ने 'ऑफिस' सॉफ्टवेयर हिन्दी में ~~व~~ निकालकर देवनागरी के कम्प्यूटरीकरण की दिशा में ~~छ~~ छलांग लगाने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखे।

(Please don't write anything in this space)

जैसा योगदान किया।
इन्ही आरंभिक प्रयत्नों से प्रेरणा लेकर गूगल देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण में क्रांतिकारी कदम बढ़ा रहा है जिसमें गूगल ट्रांसलिटरेशन, ट्रांसक्राइबर इत्यादि उपाय शामिल है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

2. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कारक-व्यवस्था से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जिसमें कोई पद क्रिया से निश्चित संबंध-युक्त स्थान ग्रहण कर वाक्य का अंश बनता है।

मानक हिन्दी की कारक व्यवस्था संस्कृत की विभक्तियों से भिन्न परसर्गों पर आधारित है। संस्कृत की ही तरह हिन्दी में भी आठ कारक हैं - छह मुख्य तथा दो गौण। संबंध और संबोधन कारकों को गौण कारक माना गया है।

कारक-व्यवस्था का विस्तृत विश्लेषण इस प्रकार है।

1. कर्ता कारक : क्रिया को करने वाली संज्ञा कर्ता कारक कहलाती है। इसके लिए 'ने' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है।

यथा: राम ने रावण को मारा। में राम कर्ता कारक है।

पुनः भूतकाल एकवचन में ही मुख्यतः परसर्ग का प्रयोग होता है अन्य जगह नहीं। यथा "राम जा रहा है" परसर्ग ~~रहित~~ रहित है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. कर्म कारक वह पद है जिसके प्रति क्रिया की जाती है। यथा - राम ने रावण को मारा में रावण कर्म कारक व 'को' परसर्ग चिह्न है।

3. करण कारक : क्रिया ~~का~~ जिसके माध्यम से की गई हो उसे करण कारक कहा जाता है यथा- राम ने रावण को तीर से मारा।
यहाँ तीर करण कारक तथा से परसर्ग चिह्न है।

4. सम्प्रदान कारक क्रिया का उद्देश्य होता है। यथा - राम ने रावण को सीता के लिए मारा। यहाँ सीता * संप्रदान कारक तथा के लिए कारक चिह्न है।

5. अपादान कारक वह होता है जो क्रिया का आरंभिक आश्रय हो परन्तु बाद में उससे अलग हो जाए। यथा - 'पेड़ से पत्ती गिरी है' में पेड़ अपादान कारक है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ

o not write except the number in)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. अधिकरण। क्रिया का कालिक, भौगोलिक या मानसिक आधार होता है। इसके लिए में, पें, पर आदि चिह्न प्रयुक्त होते हैं। यथा- सीता झाँसी में रहती है

7. जब कोई पद कर्ता या कर्म क्रिया से सम्बन्ध रखता है तो सम्बन्ध कारक कहा जाता है।
'राम का भाई लक्ष्मण से मिलना चाहता है'
में का संबंध कारक चिन्ह व राम सम्बन्ध कारक है।

8. संबोधन कारक वाक्य के शुरुआत में आता है और मुख्यतः विस्मयादिबोधक वाक्यों में प्रयुक्त होता है या फिर संबोधन आदि में।
यथा- अरे। मोहन इधर आओ
(संबोधन कारक)

इस प्रकार हिन्दी की कारक व्यवस्था वस्तुनिष्ठ एवं तर्कपूर्ण है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये।

संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को कहते हैं।

हिन्दी में संज्ञाओं को मुख्यत: तीन वर्गों में बाँटा गया है और उनमें से एक वर्ग के पुन: दो खण्ड किए गए हैं।

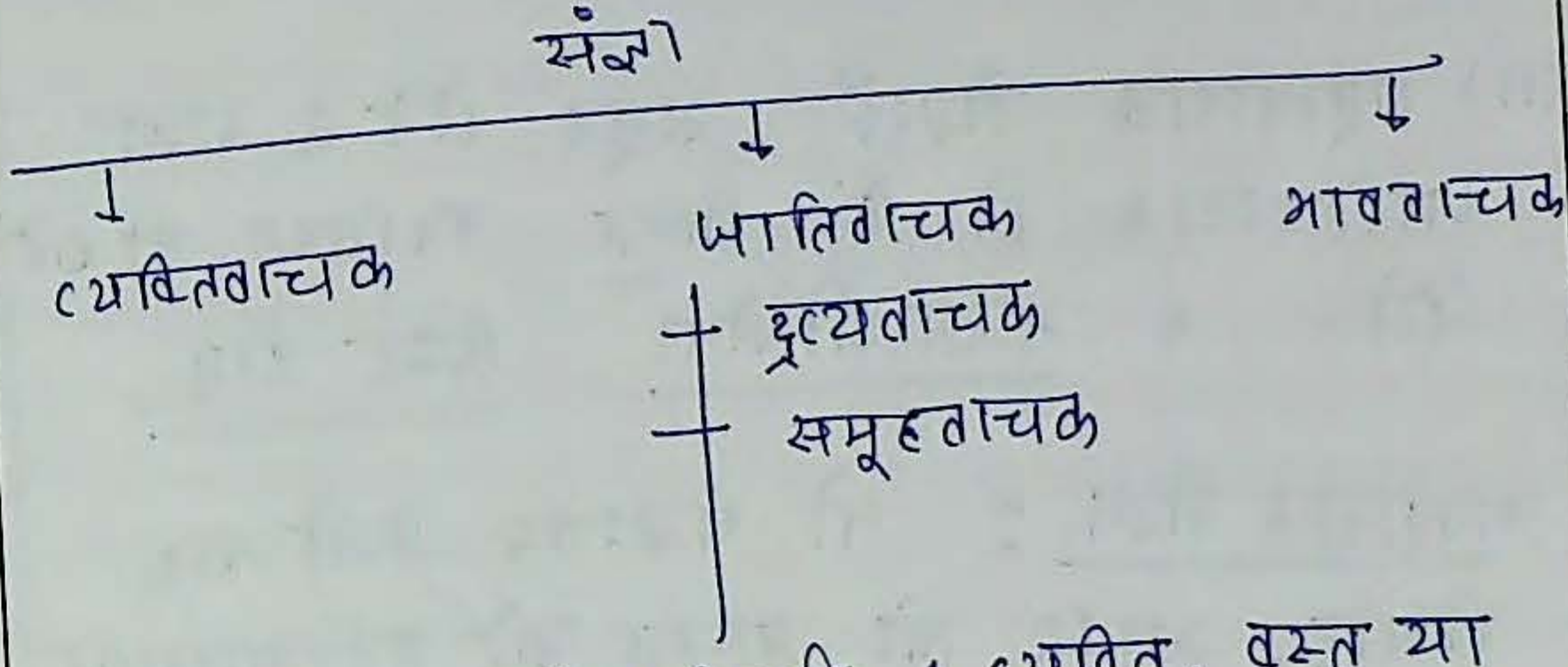

व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को कहते हैं।
उदाहरणार्थ - राम, कानपुर, इत्यादि।

जातिवाचक संज्ञा : व्यक्तिवाचक संज्ञा जिस वर्ग का हिस्सा होती है उसे जातिवाचक संज्ञा कहा जाता है।
उदाहरणार्थ : मनुष्य, शहर, बच्चे इत्यादि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्गीकरण की क्लिष्टता के कारण जातिवाचक के पुनः दो वर्ग किए जाते हैं -

(i) द्रव्यवाचक : ऐसी संज्ञाएँ जो किसी द्रव्य के वर्ग को संप्रेषित करें वे द्रव्यवाचक कहलाती हैं।
उदाहरणार्थ - शक्कर, गुड़

(ii) समूहवाचक संज्ञाएँ समूह होने के कारण जातिवाचक तो हैं किन्तु विशिष्ट भी हैं
जैसे - भारत की सेना, क्रिकेट टीम

भाववाचक संज्ञा : जो संज्ञापद किसी भाव, विचार, आदि को प्रस्तुत करे वह भाववाचक कहलाती है।
यथा - शर्माना, लजाना इत्यादि

इस प्रकार संज्ञाओं का वर्गीकरण बहुत हद तक वस्तुनिष्ठ हो गया है हालांकि कुछ अपवाद अभी भी देखने को मिलते हैं जैसे - 'नेताजी' जैसी जातिवाचक संज्ञाओं का व्यक्तिवाचक प्रयोग तथा जयचंद जैसी व्यक्तिगत संज्ञाओं का जातिवाचक प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मानवीकरण की प्रक्रिया में व्यवस्था और सुदृढ़ होती जाएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी में वैज्ञानिक्-लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक लेखन में क्रांतिकारी परिवर्तन व विकास करने का श्रेय महाराष्ट्र में जन्मे श्री गुणाकर मुले को जाता है।

मराठी-भाषी होते हुए भी इन्होंने हिन्दी वैज्ञानिक लेखन को एक चुनौती की तरह स्वीकारा तथा सम्पूर्ण दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्य किया।

इनके अवदान को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है।

1. इन्होंने एन. सी. ई. आर. टी. की पुस्तकों के निर्माण में अहम भूमिका निभाई तथा पुस्तकों की भाषा को सहज एवं सिद्धान्तों को स्पष्ट करने में सहायक रखने की दृष्टि वाला बनाया।

2. इन्होंने विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में लेखनी चलाई। चाहे वह नृविज्ञान हो, जीवविज्ञान हो, कम्प्यूटर हो, गणित हो या भौतिक-शास्त्र

3. इनकी लिखी कुछ पुस्तकों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ
(do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण इस प्रकार हैं - 'कम्प्यूटर क्या है', 'इक्कीसवीं सदी का भारत', 'तारों की जीवनगाथा' 'ज्यामिति की कहानी' इत्यादि

4. इनका प्रमुख योगदान सहज शब्दों के प्रयोग को लेकर है। इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संप्रदाय की परिपाटी का पालन करते हुए मुख्यतः ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जो समझने में आसान हों। फिर चाहे वे अंग्रेजी के हों या किसी अन्य भाषा के। उदाहरणार्थ - 'कम्प्यूटर' के लिए कम्प्यूटर शब्द न कि संगणक

इस प्रकार गुणाकर मुले ने उस परंपरा को ~~एक~~ ~~बढ़~~ गति दी जो आज तक अबाध ~~गति~~ रूप से चल रही है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

20

4. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये।

यूँ तो देवनागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में से एक मानी जाती है परन्तु फिर भी आलोचकों ने इसकी कुछ कमियों की तरफ इशारा किया है जो निम्नांकित हैं -

1. देवनागरी लिपि के अक्षरों की बनावट बड़ी जटिल बताई जाती है, साथ ही इसमें संकेतों की संख्या भी अधिक है जिससे किसी नये व्यक्ति के लिए इसे सीखना दुरूह सिद्ध होता है।

2. मात्राओं के प्रयोग में अवैज्ञानिकता दिखती है। कुछ मात्राएँ दायें तरफ तो कुछ बायें तरफ लगती हैं, कुछ ऊपर तो कुछ नीचे। पुनः यह भी कहा जाता है कि जब हर स्वर के लिए मात्रा की व्यवस्था है तो अलग से स्वर-चिह्नों जैसे इ, उ इत्यादि की क्या आवश्यकता है?

3. संयुक्ताक्षरों में भी कुछ आलोचक दोष

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बताते हैं। यथा कहीं अर्ध र ऊपर लगाता है तो कहीं नीचे। पुनः कहीं संयुक्ताक्षरों में हलन्त का प्रयोग होता है तो कहीं खड़ी पाई हटाने का रिवाज है। एक ही व्यवस्था के लिए इतने नियम नहीं होने चाहिए।

4. आलोचकों ने लिपि में कुछ ध्वनि-चिह्नों की अनुपलब्धता की भी चर्चा की है- यथा अ और ओ के बीच की ध्वनि का अभाव जैसा कि अंग्रेजी के Doctor में होता है।

5. कुछ ध्वनि चिह्न प्रयोग में नहीं होने के बावजूद मौजूद हैं जैसे कि ह्रस्व व दीर्घ ऌ, दीर्घ ॠ,। इसी प्रकार जब 'ष' का उच्चारण 'श' की तरह हो गया है तो उसे हटाया क्यों नहीं जाता?

6. शिरोरेखा के प्रयोग को निरर्थक बताया जाता है। इससे समय और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थान दोनों ही व्यर्थ होते हैं।

7. अनुस्वार व अनुनासिक के प्रयोग में भी अभी तक वस्तुनिष्ठता नहीं आने पाई है। कहीं तो अर्द्ध 'न' व अर्द्ध 'म' के लिए अनुस्वार व अनुनासिक प्रयोग होते हैं तो कहीं अर्द्ध ही।

8. अँग्रेजी में तथा फारसी में उपस्थित कुछ ध्वनियाँ जो इनसे लिए गए शब्दों के साथ आ गई हैं उनके संप्रेषण के लिए वस्तुनिष्ठ चिह्न नहीं बन पाए हैं जैसे कि ज़, फ़

9. कहीं-कहीं एक ही अक्षर के दो तरह के प्रयोग दिखते हैं।

यथा - झ - झ इत्यादि

मानकीकरण की प्रक्रिया में ज्यादातर दोषों से मुक्ति पा ली गई है, जो रह गए हैं उनमें भी वस्तुनिष्ठता का क्रम अनवरत जारी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिंदी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी शब्दों को निर्माण की दृष्टि से निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. रूढ़ शब्द : वे शब्द जो अपने आप में एक अर्थ व्यक्त करते हैं तथा जिनके अक्षर-विभाजन से निरर्थकता उत्पन्न हो जाती है वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं।
उदाहरणार्थ - उत्साह, चंद्र इत्यादि

2. यौगिक शब्द : दो रूढ़ शब्दों से मिलकर बने शब्दों को यौगिक शब्द कहा जाता है। इस शब्द में दो रूढ़ शब्द अपना स्वतन्त्र अर्थ भी रखते हैं।
उदाहरणार्थ - निजसेवा

3. योगरूढ़ : ऐसे शब्द जो बने तो दो रूढ़ शब्दों से हैं परन्तु वे कोई अन्य तीसरे अर्थ के लिए रूढ़ हो गए हैं।
यथा- चंद्रशेखर अर्थात भगवान शिव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्रोत की दृष्टि से वर्गीकरण।

1. तत्सम शब्द : जो शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों ले लिए गए हैं वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। ये जैसे कि - महात्मा, चक्षु इत्यादि।

2. तद्भव शब्द : जो शब्द संस्कृत की परंपरा में विकृति होने के कारण व लोक प्रभाव के कारण बने हैं वे तद्भव शब्द कहलाते हैं।

उदाहरणार्थ - मातृ से माता
पितृ से पिता

3. देशज शब्द : वे शब्द जो किसी स्थान विशेष की संस्कृति से संबंधित हैं तथा उस भूगोल विशेष की सीमा में प्रयुक्त किए व समझे जाते हैं, देशज कहलाते हैं।

उदाहरणार्थ - लुटिया, घंटिया इत्यादि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. अन्य भाषाओं यथा अंग्रेजी, फारसी इत्यादि से लिए गए शब्द विदेशज कहलाते हैं।

उदाहरण - रिक्शा, साइकिल, अख़बार इत्यादि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कामताप्रसाद गुरु के हिंदी-व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामताप्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण लेखन में उस दौर में आते हैं जब कुछ अंग्रेज विद्वान अंग्रेजी भाषा में तथा लक्ष्मीलाल जी व राजा शिवप्रसाद सिंह जैसे विद्वान हिन्दी में व्याकरण लेखन का प्रयास कर चुके थे। पुनः खड़ी बोली साहित्य के क्षेत्र में स्थापित हो चुकी थी और इसके प्रयोग को व्यापक बनाने की कवायद चल रही थी।

ऐसे में ~~~~ नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में तथा आचार्य शुक्ल, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी व पं चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के सहयोग से इन्होंने व्याकरण लेखन का कार्य किया।

इन्होंने व्याकरण के नियम लोक प्रयोगों को देखते हुए निर्धारित किए, ~~स्वयं~~ ऊपर से थोपे नहीं।

पुनः शैली के तौर पर इन्होंने 'दामले' के मराठी व्याकरण ~~से~~ तथा फारसी शब्दों के लिए राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

व्याकरण को आधार बनाया। पुराने व्याकरणों में प्लॉट्स के हिन्दी ग्रामर से भी सहयोग लिया।

इन्होंने तीन प्रकार की पुस्तकों का निर्माण किया। प्राथमिक व्याकरण जो कि प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाया जाता था, माध्यमिक कक्षाओं के लिए <u>मध्यम</u> तथा उच्च-शिक्षा के लिए <u>संक्षिप्त व्याकरण</u>।

इस प्रकार कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण लेखन ने हिन्दी भाषा का विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में पठन-पाठन व मानकीकरण सुनिश्चित किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Section–B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) नकेनवाद

नकेनवाद प्रयोगवाद की प्रतिस्पर्धा में बिहार में उत्पन्न आंदोलन है जिसका नाम तीन साहित्यकारों नलिन विलोचन शर्मा, केसरी प्रसाद तथा नरेश कुमार के नाम पर पड़ा।

नकेनवाद मानता है कि प्रयोगवाद के असली प्रणेता यही लोग हैं क्योंकि इन्होंने ही प्रयोगों को साध्य मानकर साहित्य रचना की। प्रयोगवादी कवि तो प्रयोगशील कहे जाने चाहिए क्योंकि उन्होंने प्रयोगों को साधन के रूप में लिया, साध्य के रूप में नहीं।

इन्होंने एक पुस्तक 'नकेन के प्रपद्य' का संपादन किया तथा इसे ही नकेनवाद का मुख्य ग्रंथ माना।

नकेनवाद लगभग उन्हीं विशेषताओं को धारण करता है जो बाद में अकविता जैसे आंदोलनों में दिखाई पड़ती हैं जैसे कि यौन क्रियाओं की अधिकता, परंपराओं का नकार इत्यादि।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस कारण से नकेनवाद को साहित्य के क्षेत्र में अधिक सम्मान प्राप्त नहीं है तथा एक नकारात्मक आंदोलन की तरह देखा जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) छायावाद के नए अलंकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद का युग खड़ी बोली को अभिव्यक्ति की विशिष्टता से निकालकर 'अनुभूति' के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने का युग है और इस कारण इस युग में कई ऐसे प्रयोग हुए जिन्होंने खड़ी बोली को कठोर से कोमल, लालित्यपूर्ण भाषा बना दिया। नये अलंकार भी ऐसा ही प्रयोग है।

छायावाद में तीन तरह के नये अलंकार मुख्यतः देखने को मिलते हैं।

(1) मानवीकरण : स्वच्छन्दतावादी कवियों के प्रकृति प्रयोग को विस्तारित करते हुए यहाँ प्रकृति को मानव-तुल्य माना गया है और मानव के समान भाव-भंगिमाओं से विभूषित किया गया है।

उदाहरणार्थ - "मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुन्दरी
परी सी
धीरे- धीरे - धीरे"

(2) ध्वन्यर्थ-व्यंजना अलंकार : ध्वनियों के प्रयोग से अर्थ घनत्व व अर्थ की व्यंजना उत्पन्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करने को ध्वन्यर्थ व्यंजना कहा गया।
उदाहरणार्थ - "झर झर झर निर्झर गिरि
सर से"

(3) विशेषण- विपर्यय अलंकार : जब विशेषणों का प्रयोग किसी ऐसे विशेष्य के लिए किया जाये जो स्थापित न हो तो विशेषण विपर्यय अलंकार कहलाता है।
उदाहरणार्थ : बच्चों के तुतले भय से

इन्हीं प्रयोगों की श्रृंखला में नये शब्दों का निर्माण, नये काव्य-रूप भी आते हैं जो आगे की कविता का उचित मार्ग-दर्शन करते हैं।

x

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

पल्लव की भूमिका का महत्व छायावाद के आगाज को लेकर वही है जो पश्चिम में रोमांटिक आंदोलन में Preface to Lyrical Ballads (प्रीफेस टू लिरिकल बल्लाड) को दिया जाता है।

एक तरफ यह भूमिका कविता के क्षेत्र में ब्रजभाषा को अस्वीकार करते हुए खड़ी बोली को स्थापित करती है ~~जब~~ तो वहीं इसमें सुमित्रानन्दन पन्त के द्वारा छायावादी आन्दोलन के वैचारिक स्तम्भों का विश्लेषण किया गया है।

इस भूमिका में पंत खड़ी बोली के लालित्य को तो स्थापित करते ही हैं, साथ ही छायावाद पर लगाए गए आरोपों का उत्तर देने की भी कोशिश करते हैं।

नए काव्य प्रतिमानों की दृष्टि से इस भूमिका का महत्व अप्रतिम है क्योंकि इस समय तक 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का पदार्पण हिन्दी ~~का~~ समीक्षा मे नहीं हुआ था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अज्ञेय की काव्यानुभूति का स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय की काव्यानुभूति हिन्दी आलोचना में ही चर्चा का विषय रही है और भिन्न-2 आलोचकों में इसे लेकर मत-भेद रहा है।

अज्ञेय ने स्वयं अपनी काव्यानुभूति का उत्कृष्ट संप्रेषण 'असाध्यवीणा' कविता के माध्यम से किया है जिसमें वे एक तरफ निर्वैयक्तिकता को प्रतिपादित करते हैं तो दूसरी तरफ परंपरा को महत्व देते हैं।

अज्ञेय मानते हैं कि किसी रचना करने वाले मन और अनुभूति वाले मन में एक अन्तर होता है और जितना ज्यादा यह अंतर होगा रचना उतनी ही महान बनेगी।

पुनः वे मानते हैं कि एक रचनाकार के व्यक्तित्व के विकास में परम्परा का योगदान अहम है। वे परम्परा और रूढ़ि में भेद करते हुए बताते हैं कि परम्परा स्वयं-अर्जित सत्य है जबकि रूढ़ि किसी पुरानी बातों का स्वीकार।

इस प्रकार वे रूढ़ि को नकारते हुए परंपरा को महत्व देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय की काव्यानुभूति में एक तत्व सृजन-शक्ति के समक्ष अहं-शून्यता का भी है जिसमें कीर्केगार्द के अस्तित्ववाद का प्रभाव नजर आता है।

समग्रत: अज्ञेय की काव्यानुभूति संश्लिष्ट एवं वैयक्तिक दोनों आयामों का चरम विकास है

---- x ----

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

निराला का काव्य एक तरफ तो विद्रोह चेतना के लिए जाना जाता है तो वही दूसरी तरफ ऐतिहासिक संदर्भों के माध्यम से वर्तमान चेतना को व्यक्त करने के लिए।

'तुलसीदास' का प्रतिपाद्य भी इसी कड़ी का एक अंश है। 'उस के आसन पर सिरस्त्राण' से शुरू करते हुए पहले खण्ड में निराला तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों की विद्रूपता की चर्चा करते हैं।

दूसरे खण्ड में वे उन सब स्थितियों की चर्चा करते हैं जो तुलसीदास की काव्य-रचना में प्रेरणा तो बनी परन्तु एक मुख्य भूमिका नहीं निभा पाई। चाहे वह तिरस्कार हो, आर्थिक संकट हों या कुछ और।

तीसरे खण्ड में निराला पत्नी द्वारा तुलसीदास को लगाई गई फटकार व उससे तुलसीदास की चेतना में आए गुणात्मक परिवर्तन को संप्रेषित करते हैं।

मूलतः यह प्रतिपाद्य इतिहास के आवरण में आधुनिक कवि की व रचना की दिशा की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेरणा देने का प्रयास है।
कुछ आलोचक इसे सरोज-स्मृति के ~~पूर्व~~ इस चरण के रूप में ही देखते हैं जहाँ निराला का नैराश्य सघन होकर उभरा है।

———— x ————

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

6. (क) हिंदी के संस्मरण-साहित्य-परंपरा का अति संक्षिप्त परिचय देते हुए समकालीन संस्मरण-साहित्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या छायावाद तद्युगीन राष्ट्रीय चेतना से पलायन का काव्य है? सप्रमाण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद से तात्पर्य 1918 से 1936 तक प्रचलित हिन्दी के रोमांटिक काव्यांदोलन से है जिसमें रहस्यवाद के भी कुछ अंश देखने को मिलते हैं।

आलोचकों ने यह मत आरोपित किया है कि स्वतन्त्रता संग्राम के सघन दौर में उपस्थित होने के तदोपरांत भी छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के अंश नहीं दिखते बल्कि पलायन का भाव दिखता है। जैसे कि प्रसाद की "ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे - धीरे" हो या फिर "मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ" के रूप में महादेवी के रहस्यवादी गीत।

दूसरा मत यह भी है कि कवि वायवीय भावनाओं में मस्त रहकर अलौकिक चिन्ताओं का समाधान अलौकिक आस्थाओं में खोजते हैं न कि राष्ट्र की समस्याओं का समाधान प्रस्तावित करते हैं यथा -

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हो
इच्छा क्यों पूरी हो मन की" का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समाधान "समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर आकार बना था" में खोजा गया।

वस्तुतः आलोचकों का यह मत छायावाद के एक अंश की ही व्याख्या करता है, सम्पूर्ण छायावाद की नहीं।

डॉ. नगेन्द्र ने स्पष्ट कहा है कि "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है" और इसी तारतम्य में छायावाद में राष्ट्रीय चेतना भी सूक्ष्म रूप में उपलब्ध है, आंदोलन के रोजनामचे के रूप में नहीं।

छायावादी कविता ~~पर~~ राष्ट्रीय चिंताओं को प्रमुखता से उठाती है जैसे कि 'राम की शक्ति-पूजा' एक अर्थ में स्वाधीनता संग्राम को ही व्यक्त करती है।
पुनः आमजन का आह्वान करते हुए प्रसाद लिखते हैं

" हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध-शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा, समुज्ज्वला, स्वतन्त्रता पुकारती "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छायावादी कवि सिर्फ राष्ट्र-आंदोलन का ही चित्रण नहीं करते वरन् राष्ट्र में व्याप्त समस्याओं तक भी आम जन व विशिष्ट वर्ग का ध्यान पहुँचाना चाहते हैं। चाहे वह 'भिक्षुक' की व्यथा का संप्रेषण हो या 'इलाहाबाद के पथ पर' 'वह तोड़ती पत्थर' का प्रतिपाद्य।

राष्ट्रीय चेतना में एक कदम आगे बढ़कर छायावादी कवि राष्ट्र-स्वाधीनता के उपाय सुझाते हुए चलते हैं सिर्फ स्थूल चित्रण ही नहीं करते।

चाहे वह 'शक्ति की मौलिक कल्पना' का स्वर हो या फिर 'आराधन का दृढ़ आराधन से उत्तर दो' का आह्वान हो। वे विवेकहीन शक्ति के प्रयोग को नकारते हुए आंतरिक शक्ति का प्रयोग करने की सलाह देते हैं।

इस प्रकार छायावादी कविता सूक्ष्म अर्थों में राष्ट्रीय चेतना व विश्व चेतना को धारण करती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिंदी यात्रा-साहित्य के विकास में राहुल-सांकृत्यायन के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हि-दी यात्रा-साहित्य में पं राहुल-सांकृत्यायन का स्थान वही है जो कहानी में 'प्रेमचंद' का व आलोचना में 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' का।

सांकृत्यायन जीवन पर्यन्त अबाध गति से यात्रा करते रहे और अपने यात्रा वर्णनों में कल्पना, चिंतन की सूक्ष्मता, संप्रेषण की सजगता का मिश्रण कर हि-दी यात्रा साहित्य को समृद्ध करते रहे।

उनके यात्रा साहित्य में उनके देश और विदेश यात्राओं के विवरण सम्मिलित हैं। उदाहरणार्थ - 'तिब्बत में मेरे सवा-वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'गंगा से वोल्गा तक'

अपने यात्रा वर्णनों में वे प्रांजल भाषा का प्रयोग करते हुए तमाम सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, मानवशास्त्रीय वर्णनों को समेटते चलते हैं और एक-एक विषय को एक-एक अनुभव को ऐसे सूक्ष्म वर्णनों के साथ प्रस्तुत करते हैं मानों किसी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

धागे का रेशा- रेशा खोलकर रख दिया है। वे वर्णनों तक ही नहीं रुकते। नवयुवकों को दुनिया की सैर करने की सलाह देते हुए 'घुमक्कड़ शास्त्र' की रचना करते हैं तथा सलाह देते हैं कि अच्छा घुमक्कड़ वही है जो देश, भूगोल की सीमाओं से परे विश्व- बंधुत्व की परिकल्पना में विश्वास रखता है।

पं. राहुल सांकृत्यायन के इसी संदेश को उनके शब्दों में कुछ यूँ व्यक्त किया जा सकता है -

" सैर कर दुनिया की गाफ़िल, ज़िंदगानी फिर कहाँ,
ज़िंदगानी जो रही तो, नौजवानी फिर कहाँ"

उनकी इसी परंपरा को अज्ञेय पूर्णता की स्थिति में पहुँचाते हैं तथा आगे के साहित्यकारों के लिए मानदण्ड स्थापित करते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 15

हिन्दी की काव्यधाराओं में 1936 से 1943 तक चली प्रगतिवादी व 1943 से 1951 तक चली प्रयोगवादी काव्यधारा का विशिष्ट स्थान है।

~~प्रगति~~ इन काव्यधाराओं की तुलना हेतु हमें इनकी कुछ समानताओं व असमानताओं पर ध्यान देना होगा।

एक तरफ जहाँ दोनों ही काव्यधाराएँ छायावदी वायवीयता का निषेध करती हैं तथा लौकिक चिन्ताओं को अपने काव्य का विषय बनाती हैं तो वहीं दूसरी तरफ उनमें कुछ विशिष्ट अन्तर भी हैं—

1. प्रगतिवादी काव्यधारा जहाँ मार्क्सवाद से अपनी वैचारिक ऊर्जा ग्रहण करती है तो प्रयोगवादी काव्यधारा सभी विचारधाराओं को नकार कर स्वयं सत्य खोजने की ओर प्रयत्नरत है।

2. प्रगतिवादी काव्यधारा साहित्य के सामाजिक उद्देश्य तय करती है तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कहती है कि शोषक वर्ग के शोषण तंत्र से शोषित वर्ग को वाकिफ़ कराना ही साहित्य का एकमात्र उद्देश्य है वहीं प्रयोगवादी काव्यधारा 'काव्य' को ही 'काव्य' का उद्देश्य मानती है। प्रयोगवाद मानता है कि कविता का उद्देश्य 'कविता के बाहर कुछ नहीं, वह अधिक से अधिक व्यक्ति को संस्कारित कर सकती है'।

3. = प्रगतिवादी काव्यधारा जहाँ वस्तु को प्रमुखता देते हुए शिल्प को गौण बताती है वहीं प्रयोगवादी काव्यधारा में शिल्प को ही कविता का प्रमुख अंग माना गया है जो कवि को अ-कवि से अलग करती है। इनका मानना है कि भाषा की क्षमता ही व्यक्ति की चिंतन क्षमता निर्धारित करती है।

4. = प्रगतिवाद एक सामाजिक जबकि प्रयोगवाद वैयक्तिक आंदोलन है जो मानता है कि "व्यक्ति समाज से तो नहीं पर समाज में स्वतन्त्र है"।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

5. प्रगतिवाद में जहाँ सभी प्रतीकों, बिंबों अलंकारों, का नकार किया गया है वहीं प्रयोगवादी कविता इन्हें संप्रेषण में वृद्धि का साधन मानती है।

इस प्रकार प्रयोगवाद आंदोलन प्रगतिवाद की वैचारिक यांत्रिकताओं और छायावाद की वायवीयता का विरोध करता है और 'स्वानुभूति' पर आधारित नई कविता के लिए मजबूत आधारशिला प्रदान करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

8. (क) हिंदी के नवगीत आंदोलन का परिचय देते हुए उसकी विशेषताओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation